Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011
ISSN:- 2230-7850
Available online at www.lbp.world

लोककथा की विशेषताएँ

डॉ.एम.ए.पवार
श्री.वसंतराव नाईक महाविद्यालय धारणी

प्रस्तावना :

आधुनिक कहानियों एवं लोककथाओं के अन्तर को डॉ.शंकरलाल यादव ने विस्तार के साथ स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। उन्होने निम्न आठ शिर्षकों के अन्तर्गत पार्थक्य का निर्धरण किया है।

१. लोक कहानियों में पशु-पक्षी भी पात्र है, जबकि आख्यायिकाओं या शिष्ट साहित्यिक कहानियों में मानवीय पात्र ही रह सकते है। मनुष्य पात्रों में शिष्ट कथा में साधारण वर्ग के पात्र रहते है, जबकि लोककथाओं में विशिष्ट वर्ग (जैसे राजा-रानी, परी, सेठ साहूकार आदि) कें
२. लोक कहानियॉं कुतूहल प्रधान होती है, जबकी आधुनिक साहित्यीक कहानियों में मौलिकता का तत्व कथानक का मेरूदंड माना जाता है।
३. जीवन संघर्ष पुरूषार्थ प्रधानता आधुनिक कहानियों का विशेष लक्षण है जबकि लोक कहानियॉं भाग्यवादी आस्था के ढांचे पर खडी होती है।
४. आधुनिक कहानियों में चरित्र चित्रण पर बल रहता है। जबकि लोककहानियों में रस चर्वणापर
५. लोक कहानियों में घटनाओं की बहुलता रहती है। जबकि आधुनिक कहानियों में भाव विचार या अनुभूति प्रधान रहती है।
६. लोक कहानी पाठक को तृप्त करती है जबकि आधुनिक कहानियॉं विचारोत्तेजित करती है।
७. लोक कहानियॉं सुखान्त ही होती है जबकि आधुनिक कहानी के लिए यह आवश्यक नही।
८. लोक कहानियों में सामाजिक सम्पन्नता रही है जब कि आधुनिक कहानियों में सामाजिक वैषम्य राजनितीक हलचलों की विवृत्ती होती है।

उपर्युक्त पार्थक्य भेदक स्थितियों में अन्तिम भेद का उल्लेख तो डा.कृष्णदेव उपाध्याय ने भी किया था। इन सब भेदो के अतिरिक्त मुख्य बात यह भी है कि लोक कहानी सहज शैली में अभिव्यक्त होती है। जबकि आधुनिक कहानीकार इसके रचना शिल्प के प्रति सजग रहता है।

लोककहानियों का शिल्प - लोककथाओं का सच पूछे तो कोई शिल्प होता ही नही, क्योंकि लोककथाकार ने इस सम्बन्ध में कोई विचार नही किया होता। वह तो अत्यंत सहज रूप में कथा सर्जना करता गया था। यहॉं कि उसके विभिन्न तत्वों तक का उसे पता न था। किन्तु आज लोक कहानी का पूर्ण परिचय प्राप्त करने के लिए हम उसके शिल्प की विशेषताओं का उल्लेख करना चाहते है। विव्दनों व्दारा लोक कहानियों के निम्न तत्वो का उल्लेख किया गया है।

(१) कथावस्तु (२) पात्र (३) कथेपकथन (४) चरित्र-चित्रण (५) वातावरण (६) शैली (७) उद्देश्य

इस सम्बन्ध में यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि साहित्यिक कहानियों में पात्र और चरित्र चित्रण दो पृथक तत्व नही होते जब कि लोक कहानियों के तत्वों के अंतर्गत विव्दानों ने इन्हे पृथक पृथक माना है। अब क्रमश: इन तत्वो से सम्बन्धित विशेषताओं का परिचय प्रस्तुत है।

(१) कथावस्तु - लोक कहानियों में वस्तु संयोजना के क्षेत्र में साहित्यिक कहानियों से यही पार्थक्य होता है कि उनमें शिष्ट कहानियों की भांति घटनाओं के घात-प्रतिघात नही होते। लोककहानियों के कथानक में संभाव्यता का कोई स्थान नही होता, जबकि साहित्यीक कहानियों में असंभवता का कोई मूल्य नही माना जाता।
(२) पात्र - लोककहानियों में पशु-पक्षी भी पात्र है और राजा-महाराजा भी पौराणिक देवता भी प्रधान रूप से स्थान पाते है। नायक की सफलता और प्रतिनायक को दण्ड का विधान अवश्य रहता है।
(३) कथेपकथन - लोक कहानियों में संवाद अत्यंत शिथिल होते है। पशु-पक्षी भी बोलते है किन्तु उनमें कसाव नही होता.
(४) चरित्र-चित्रण - चरित्र-चित्रण के ना पर लोक कहानियों में प्राय:पात्र या तो उपदेष्टा के रूप में सामने आते है अथवा अलौकिकता के आवरण में अस्तित्व की संभावना से कोसो दूर। चरित्रों में विकास का कोई अवसर नही होता।
(५) वातावरण - लोक कहानियों में ग्रामिण अंचल ही खुलकर सामने आता है। स्वस्थ एवं सुखकर वातावरण की सृष्टी इनमें रहती है।
(६) शैली - स्वाभाविक कथन शैली, लोकभाषा की सरलता, सहजता एवं गतिशीलता के कारण इनकी शैली में कृत्रिमता के लिएकोई स्थान नही होता। लोककहानियों का प्रारम्भ अतीत की रोचकता, मध्यभाग अत्यन्त विस्तार की सम्भावना लिए तथा अन्त आशिर्वाद या मंगल वचन के साथ आता है।
(७) उद्देश्य - लोक कहानियों में उद्देश्य के नाम पर मनोरंजन का प्रयोजन ही मुख्य माना जाता है। वैसे धर्म कथाओं में धार्मिक आस्था एवं धर्म-शिक्षा ही उद्देश्य होता है। अनेक बार श्रोताओं को रस चर्वणा कराना भी एक उद्देश्य हो सकता है।

लोककथाओं की विशेषताएँ -

लोककथाओं एवं साहित्यिक आख्यायिकाओं में अन्तर स्पष्ट करने के लिए लोककथाओं के शिल्प पर विचार किया गया। अब हम कुछ ऐसी विशेषताओं का उल्लेख करना चाहते है, जिनके आधार पर किसी भी कहानी को पहचाना जा सके और यह निर्णय दिया जा सके कि अमुक कहानी शिष्ट साहित्यिक कहानी है अथवा लोककथा। इस सम्बन्ध में डा.कृष्णदेव उपाध्याय के व्दारा वर्णित लोककथाओं की निम्न आठ विशेषताओं की आर हमारा ध्यान जाता है।

१. प्रेम का अभिन्न पुट
२. अश्लील श्रृंगार का अभाव
३. मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों से निरंतर साहचर्य
४. मंगल कामना की भावना
५. संयोग में कथाओं का अन्त
६. रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की प्रधानता
७. उत्सुकता की भावना
८. वर्णन की स्वाभाविकता

इन्ही विशेषताओं को देखकर किसी कहानी के विषय में यह निर्णय लिया जा सकता है कि यदि ऐसी विशेषताएँ किसी कहानी में उपलब्ध हो तब तो वह लोक कहानी कही जाएगी और यदि ऐसी विशेषताओं का किसी कहानी में अभाव हो तथा आधुनिक साहित्यिक कहानी के तत्व उपलब्ध हो तब उसे साहित्यिक आख्यायिका कहना चाहिए।

आधुनिक युग के अनुसंधाता विव्दानों में डा.मोहनलाल बाबुलकर का नाम उल्लेखनीय है, जिन्होने गढवाली लोककथाओं का विषयगत विभाजन किया है। उन्होने निम्न वाक्य में अपने वर्गीकरण के औचित्य की स्थापना भी की है।

लोककथाओं के वर्गीकरण की विवेचना करते समय पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि कथाओं का वर्गीकरण व्यक्त लोक जीवन के आधार पर ही किया जा सकता है। कथाओं की उपयोगिता क्या है, और लोक ने इनका उपयोग किस अवसर पर किया है इन्ही विषयों के आधार पर कथाओं को हम उनकी उपयोगिता और विषय के आधार पर विभाजित कर सकते है।

डॉ.बाबुलकर ने लोककथाओं को निम्नांकित ९ भागों में विभक्त किया है।

१. देव गाथाएँ
२. कथा
३. व्रत की कथाएं
४. उपदेशात्मक कथाए
१. पक्षियों की कथाए
२. पशुओं की कथाए
३. ज्ञान की कथाए

५. मनोरंजक कथाए
६. भूतों की कथाए
७. परियों की कथाए
८. समाधान मूलक कथाए, तथा
९. अन्य कथाए

इस वर्गीकरण को भी आलोचना का विषय बनाया जा सकता है। ६ और ७ क्रम पर दी गई कथाओं को आश्चर्य जनक कथाए कहकर एक श्रेणी में ही रखा जा सकता है। इसी प्रकार अन्य कथाऍं कहकर जो विविध कथारूपों का अनिश्चित श्रेणी विभाजन किया है यह ठीक प्रतीत नही होता.

इसी क्रम में बंगाली लोककथाओं के अनुसंधाता विव्दान डा. दिनेशचन्द सेन का वर्गीकरण भी उपस्थित करना उचित प्रतित होता है। जिन्होने बंगाल की लोककथाओं का अध्ययन करने के प्रसंग में निम्न प्रकार के चार कथा-रूप माने है।

१. रूप कथा (Subber Natural Tales)
२. हास्य कथाए (Humerous Tales)
३. व्रत कथाए (Religious Tales)
४. गीत कथाए (Nursury Tales)
५.

इस प्रकार हमने विभिन्न विव्दानों के व्दारा किये गये वर्गीकरणों का संक्षिप्त परिचय दिया है। कहना न होगा, प्रत्येक विव्दान ने लोककथाओं का वर्गीकरण करते समय एक विशिष्ट क्षेत्र की लोककथाओं को अपने दृष्टीपथ में रखा है। वैसे डा.सत्येन्द्र ने ब्रज की लोककथाओं को बाबुलकर ने गढवाली लोककथाओं को डा.सेन ने बंगाली लोककथाओं को डा.उपाध्याय ने भोजपुरी लोकथाओं को ही अपने वर्गीकरण का आधार बनाया है। इसी लिए इन सभी विव्दानों के वर्गीकरण से सम्बन्धित क्षेत्रों की लोककथाऍं उचित ही कही जायेंगी। परंतु सर्व सम्मत एवं सर्व स्विकृत वर्गीकरण के सम्बन्ध में विचार करते समय हमें यह सोचना पडेगा कि इन सभी वर्गीकरणों में कोई एक भी वर्गीकरण सर्व सम्मत नही माना जा सकता। कारण स्पष्ट है कि इन वर्गीकरणों पर सार्वदेशिकता की छाप नही है।

फिर भी चूंकि हजारों प्रकार की लोककथाओं को विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों, उपयोगिताओं, विषय सामग्री में वैविध्य होने के कारण सरलता से श्रेणी बध्द नही किया जा सकता फिर भी डा.कृष्णदेव उपाध्याय का वर्गीकरण अधिक वैज्ञानिक प्रतीत होता है, जिसका संकेत डा.सत्येन्द्र की आलोचना के प्रसंग में किया जा चुका है। इन्होने उपदेशात्मक कथाओं को ही प्रमुख प्रकार की कथा माना है। और लोककथाओं का बहुत बडा प्रतिशत इसी वर्ग में समाविष्ट किये जाने का संकेत किया है। इसके अलावा भारत धर्म प्राण जनपद होने के कारण व्रत कथाओं को भी महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। जीस प्रकार की प्रेम कथाऍं है। इनमें परिवार के विभिन्न सदस्यों के परिवारीक प्रेम की अभिव्यंजना हुई है। तथा मुख्य रूप से प्रेम और प्रेमिकाओं के इतिवृत्त भी इसमें ही आने है। चौथी कोटि की कहानियॉं मनोरंजन प्रधान है जिनका मुख्य उद्देश्य उनके श्रोताओं का मनोरंजन करना होता है। पांचवे प्रकार की वे कथाऍं है। जिनमें समाज की व्यवस्था अनेक प्रकार की सामाजीक समस्याओं का उल्लेख रहता है। अतिम प्रकार की वे है, जिनके कथानक का स्त्रोत कोई न कोई पुराण रहा होता है। ऐसे कथावर्ग का आधारभूत ग्रंथ पुराण ही होता है। इसलिए इन्हे पौराणीक कथा कहकर पुकारा जाता है।

डा.उपाध्याय का यह वर्गीकरण ही सर्वश्रेष्ठ वर्गीकरण कहा जा सकता है क्यों कि इस वर्गीकरण के अंतर्गत सभी जनपदो की कहानियों को समाविष्ट किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ -

लोकसाहित्य सिध्दांत और प्रयोग
- डॉ.श्रीराम शर्मा